अगर आपकी कोई नहीं सुन रहा है तो, आप राहुल गांधी है-राजनीतिक विश्लेषक

तेवर वही, अंदाज नया .....!
साप्ताहिक

उज्जैन टाइम्स

डाक रजिस्ट्रेशन नं. मालवा डिवीजन-
L2/65/RNP/397/2024-2026

प्रधान सम्पादक : मनमोहन शर्मा

RNI No. 7583/61

● वर्ष : 63, अंक : 33 ● उज्जैन, मंगलवार दिनांक 14-05-2024 से 20-05-2024 तक ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 2 रुपये

प्रधानमंत्री मोदी की संपत्ति 3 करोड़ रुपये से अधिक, कोई जमीन, घर या कार नहीं

वाराणसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की कुल संपत्ति 3 करोड़ रुपये से अधिक है, लेकिन उनके पास अपनी कोई जमीन, घर या कार नहीं है। अपने चुनावी हलफनामे में पीएम मोदी ने ये जानकारी दी। प्रधानमंत्री ने वाराणसी सीट से अपना नामांकन दाखिल किया। जिसके बाद उनका चुनावी हलफनामा सामने आया है। हलफनामे में, पीएम मोदी ने कुल 3.02 करोड़ रुपये की संपत्ति घोषित की है। हलफनामे में उनके पास 3.02 करोड़ रुपये से अधिक की चल और अचल संपत्ति है, जिसमें भारतीय स्टेट बैंक में दो करोड़ 89 लाख 45 हजार 598 रुपये की सावधि जमा (फिक्स्ड डिपॉजिट) शामिल है। उनके हाथ में कुल नकदी 52,920 रुपये हैं और गांधीनगर और वाराणसी में उनके दो बैंक खातों में 80,304 रुपये जमा हैं।

प्रधानमंत्री की अन्य संपत्तियों में 45 ग्राम वजन वाली चार सोने की अंगूठियां शामिल हैं, जिनकी कीमत दो लाख 67 हजार रुपये है। उनके पास

कुल 52 हजार 920 रुपये नकद और नौ लाख 12 हजार रुपये के राष्ट्रीय बचत प्रमाणपत्र हैं। पिछले वित्तीय वर्ष में उन्होंने तीन लाख 33 हजार रुपये आयकर चुकाया है। चुनावी शपथपत्र में अचल संपत्ति के खाने में शून्य लिखा है। आम तौर पर, जमीन और घर इस तरह की संपत्ति की श्रेणी में आते हैं।

शपथ पत्र में मोदी की पत्नी के रूप में जशोदाबेन के नाम का उल्लेख किया गया है। जशोदाबेन के पास मौजूद संपत्तियों के बारे में उन्होंने ज्ञात नहीं लिखा है। दोनों अलग-अलग रहते हैं। शपथपत्र के अनुसार, मोदी के खिलाफ कोई आपराधिक मामला लंबित नहीं है, न ही उन्हें किसी अपराध के लिए दोषी ठहराया गया है। सरकार के प्रति उनकी कोई देनदारी भी नहीं है।

शपथ पत्र के मुताबिक प्रधानमंत्री अहमदाबाद के निवासी हैं और राजनीति उनका पेशा है। चुनावी हलफनामे में दिए गए शैक्षणिक विवरण के मुताबिक मोदी ने साल 1967 में एसएससी किया, 1978 में दिल्ली विश्वविद्यालय से बीए की डिग्री प्राप्त की और 1983 में गुजरात विश्वविद्यालय से एमए किया। वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में मोदी ने गुजरात के गांधीनगर में एक आवासीय भूखंड, 1.27 करोड़ रुपये की सावधि जमा और 38,750 रुपये नकद सहित 2.50 करोड़ रुपये की संपत्ति घोषित की थी। इसके अलावा 2014 के लोकसभा चुनाव में उन्होंने कुल 1.65 करोड़ रुपये की संपत्ति का खुलासा किया था। शपथपत्र के अनुसार प्रधानमंत्री की एक वेबसाइट है और वह फेसबुक, माइक्रोब्लॉगिंग साइट एक्स, यूट्यूब, इंस्टाग्राम और व्हाट्सएप पर सक्रिय हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने किया मतदान

उज्जैन। लोकसभा चुनाव के चौथे चरण की वोटिंग सोमवार को सुबह 7 बजे से शुरू हो गई थी। जो शाम 6 बजे तक जारी रही। चौथे चरण में मध्यप्रदेश की 8 सीटें शामिल है। इसी बीच प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव उज्जैन पहुंचे। जहां उन्होंने मतदान किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव उज्जैन दक्षिण विधानसभा के मतदाता है। इस दौरान उन्होंने मतदाताओं से भी अपने मताधिकार का प्रयोग का आव्हान किया। मुख्यमंत्री यादव ने मतदान केंद्र नरुमल गगनदास जेठवानी सिंधी धर्मशाला, फ्रीगंज, बूथ नंबर 60 पर मतदान किया। मतदान से पहले उन्होंने भगवान हनुमान के दर्शन किए। घर से निकलने से पहले उन्होंने पिता का भी आशीर्वाद लिया। मुख्यमंत्री ने कहा कि मेरा मत, मेरा अधिकार है। लोकसभा चुनाव के चौथे चरण में आज उज्जैन लोकसभा में मैंने मतदान कर अपना कर्तव्य निभाया। मेरा सभी से आग्रह है कि आप भी मजबूत लोकतंत्र के लिए अपने मताधिकार का प्रयोग अवश्य करें। मतदान के बाद सीएम मोहन यादव ने मतदान के बाद मीडिया से कहा कि देश को मजबूत करने के लिए मतदान करना जरूरी है। इस दौरान वे कांग्रेस पर भी जमकर बरसे। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने नकारात्मकता की सीमा पार कर दी। नोटा को प्रत्याशी बनाकर प्रचार करना गलत। उन्होंने कहा कि भगवान राम का अपमान करना कांग्रेस की परंपरा है। कांग्रेस ने पाकिस्तान की इज्जत की, इसलिए उसने हम पर दो-दो बार आक्रमण किए। उन्होंने कहा कि प्रसन्नता है बाबा महाकाल की नगरी में लोगों में उत्साह है। भगवान के दर्शन करने के बाद वोट डालने आए। जीत का एक नया रिकॉर्ड बनेगा। मध्य प्रदेश में साड़ी की सारी चीजों पर बीजेपी जीतेगी।

इस दौरान मुख्यमंत्री ने कांग्रेस पर जमकर हमला बोला। कहा कि एक तरफ तनातनी है और एक तरफ सनातनी हैं।

म.प्र. में 71.72 प्रतिशत हुआ मतदान

भोपाल। लोकसभा चुनाव के चौथे चरण के तहत म.प्र. में आज आठ संसदीय क्षेत्रों में निर्विघ्न तरीके से मतदान सम्पन्न हो गया और एक करोड़ 63 लाख से अधिक मतदाताओं में से 71.72 प्रतिशत लोगों ने अपने मताधिकार का उपयोग किया। इसी के साथ राज्य में चार चरणों में सभी 29 सीटों पर मतदान की प्रक्रिया पूरी हो गई। आठ संसदीय क्षेत्रों में अंतिम जानकारी के अनुसार 71.72 प्रतिशत मतदान हुआ है। संसदीय क्षेत्र देवास (अजा) में 74.86 प्रतिशत, उज्जैन (अजा) में 73.03, मंदसौर में 74.50, रतलाम (अजजा) में 72.86, धार (अजजा) में 71.50, इंदौर में 60.53, खरगोन (अजजा) में 75.79 और खंडवा में 70.72 प्रतिशत मतदान दर्ज किया गया है। सबसे कम मतदान इंदौर में दर्ज किया गया।

इन आठों संसदीय क्षेत्रों में पांच महिलाओं समेत कुल 74 प्रत्याशी चुनावी मैदान में हैं। इनमें देवास और मंदसौर में आठ-आठ, खंडवा में 11, खरगोन में पांच, रतलाम में 12, धार में सात, इंदौर में 14 और उज्जैन में नौ प्रत्याशी शामिल हैं। इन क्षेत्रों में मतदाताओं की कुल संख्या एक करोड़ 63 लाख 70 हजार से अधिक है। कुल 18,007 मतदान केंद्रों पर सख्त सुरक्षा प्रबंध के बीच लगभग 72 हजार कर्मचारियों ने मतदान कार्य संपन्न कराया। कुल मतदाताओं की संख्या एक करोड़ 63 लाख 70 हजार से अधिक है, जिसमें 82 लाख 48 हजार से अधिक पुरुष, 81 लाख 22 हजार से अधिक महिलाएं और थर्ड जेंडर के वोटर 388 शामिल हैं।

सम्पादकीय

पारिवारिक और सामाजिक उपेक्षा

अगर बुजुर्गों की आबादी का एक बड़ा हिस्सा किन्हीं वजहों से अपना इलाज नहीं करा पाता, तो यह समाज और व्यवस्था की एक बड़ी नाकामी है। गौरतलब है कि एक गैरसरकारी संगठन के अध्ययन में यह तथ्य सामने आया है कि शहरी इलाकों के लगभग पचास फीसद बुजुर्ग आर्थिक मुश्किलों और कई अन्य तरह की चुनौतियों के चलते जरूरत के वक्त चिकित्सकों के पास नहीं जा पाते हैं। ग्रामीण इलाकों में यह समस्या ज्यादा व्यापक है। वहां बुजुर्ग आबादी के बासठ फीसद से ज्यादा के सामने आर्थिक और अन्य बाधाएं खड़ी हैं, जिनके चलते उन्हें बीमारी में मुश्किलों का सामना करना पड़ता है।

आमतौर पर साठ वर्ष की उम्र के बाद व्यक्ति को सेवानिवृत्ति की वजह से आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जबकि इसी उम्र में उन्हें सेहत संबंधी देखभाल की ज्यादा जरूरत पड़ती है। ऐसे में अगर स्वास्थ्य सुविधाएं सुलभ हों तो उनका जीवन कुछ आसान हो सकता है। मगर कई बार पारिवारिक उपेक्षा के शिकार बुजुर्गों को सरकार की ओर से भी सामाजिक सुरक्षा के रूप में कोई विशेष सुविधा नहीं मिल पाती है। वहीं देश के कई इलाकों में सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव और आर्थिक स्थिति से जुड़ी समस्याएं जगजाहिर रही हैं।

यह कोई छिपा तथ्य नहीं है कि आज वृद्धावस्था में पेंशन या अन्य सामाजिक सुरक्षा के अभाव में दैनिक खर्च और स्वास्थ्य देखभाल पर खर्च में भारी उछाल आया है। इसके अलावा, स्वास्थ्य बीमा के क्षेत्र में ज्यादा उम्र वालों के लिए अब तक जो शर्तें रही हैं, वे स्वास्थ्य सुविधाओं तक उनकी पहुंच को मुश्किल बनाती हैं। आए दिन ऐसी खबरें आती रहती हैं कि किसी वृद्ध व्यक्ति के बीमार पड़ने पर उचित इलाज न मिल पाने से उसकी जान चली गई।

यह ध्यान रखने की जरूरत है कि आमतौर पर हर बुजुर्ग अपने बाद की उस पीढ़ी को बेहतर जीवन देने के लिए अपनी जिंदगी झोंक देता है, जो अपने परिवार साथ-साथ समाज और देश के लिए एक उपयोगी संसाधन बनता है।

सवाल है कि बुजुर्गों की अपनी संतानें और सत्ता-तंत्र उसके स्वास्थ्य और संतोषजनक जीवन के लिए उचित व्यवस्था करने के प्रति उदासीन क्यों रहता है।

सैम पित्रोदा की भावना देश के लिए खतरनाक

सैम पित्रोदा अपने वक्तव्यों को लेकर सदैव चर्चित रहे हैं। उन्होने कभी मिडिल क्लास से अधिकतम टैक्स वसूलने की सलाह दी, तो कभी विरासत में मिली संपत्ति का एक बड़ा भाग सरकार द्वारा ले लेने की बात कही। जब सुप्रीम कोर्ट के आदेश से अयोध्या में भगवान रामलला जन्मस्थान मंदिर बनने का मार्ग प्रशस्त हुआ तब उन्होंने मंदिर को अनावश्यक बताया था। अब उनका नया वक्तव्य आया है। उन्होंने इस वक्तव्य में भारत के निवासियों को उनके रंग, क्षेत्र एवं कद-काठी के आधार पर वर्गीकृत किया है और विदेशी नस्लों से जोड़ा है। सैम पित्रोदा ने अपने वक्तव्य में पूर्वी भारत के लोगों चाइनीज नस्ल जैसा, उत्तर भारत के लोग अंग्रेजी, पश्चिम भारत के लोगों को अरब, और दक्षिण के लोगों अफ्रीकी नस्ल जैसा माना है।

सैम पित्रोदा यहीं नहीं रुके। उन्होंने यह भी कहा कि दक्षिण भारत के लोग अपेक्षाकृत अधिक बुद्धिमान होते हैं। सैम पित्रोदा इन दिनों अमेरिका में रहते हैं। उनका ये वक्तव्य वहीं से आया है। वे काँग्रेस के वरिष्ठ सदस्य और ओव्हरसीज काँग्रेस के अध्यक्ष हैं। काँग्रेस की यह शाखा अमेरिकी और यूरोपीय देशों में सक्रिय है। काँग्रेस के सलाहकार समूह में वे महत्वपूर्ण सदस्य हैं, राजीव गाँधी के विश्वस्त रहे और उन्हें राहुल गाँधी का सलाहकार भी माना जाता है। उनके सुझावों पर काँग्रेस ने अनेक नीतिगत निर्णय लिये हैं। भारत में विभेद पैदा करने वाला वक्तव्य ऐसे समय आया जब पूरा देश अठारहवीं लोकसभा चुनाव के वातावरण में तैर रहा है। चार चरणों का मतदान हो चुका है। तीन चरणों का मतदान और होना है। लोकसभा के इस चुनाव में भी वर्ष 2019 की भाँति साँस्कृतिक राष्ट्रभाव और सामाजिक एकत्व भाव प्रबल हो रहा है। सत्य क्या है यह तो चार जून को परिणाम के साथ ही पता चलेगा किन्तु अभी यह माना जा रहा है कि इस सांस्कृतिक राष्ट्रभाव और एकत्व का झुकाव की ओर है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पहले कार्यकाल में अपना पद संभालते ही इस एकत्व पर जोर दिया था। उनका नारा था- सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास। समय के साथ अयोध्या में श्रीराम जन्मस्थान मंदिर योजना ने भी आकार लिया। अब यह मोदीजी का नारा हो या कालचक्र का अपना प्रभाव कि सामाजिक एकत्व और साँस्कृतिक राष्ट्रभाव इन दस वर्षों में अधिक मुखर हुआ है। इसका आधार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को माना जा रहा है। लोकसभा के इस चुनाव में भी इसकी झलक स्पष्ट है। इस वातावरण से उन राजनीतिक दलों को अपनी सफलता कुछ दूर दिखाई दे रही है जिनका लक्ष्य केवल सत्ता है और उसे प्राप्त करने केलिये कोई भी फार्मूला अपना सकते हैं। सल्तनत काल और अंग्रेजी काल का इतिहास गवाह है विदेशी शक्तियों ने भारत में अपनी जड़े जमाने के लिए सामाजिक और क्षेत्रीय विभेद पैदा करने का ही षड्यंत्र किया था। इसी की झलक इस चुनाव प्रचार में दिख रही है। सामाजिक एकत्व में सेंध लगाने केलिये पहले जाति आधारित जनगणना और धर्म आधारित आरक्षण पर बहुत जोर दिया गया। फिर शब्दांतरण से मुस्लिम समाज के आरक्षण का संकेत भी आया। इंडी गठबंधन के महत्वपूर्ण घटक लालू प्रसाद यादव ने तो मुस्लिम समाज को आरक्षण देने की बात खुलकर कही। इन बातों का प्रभाव तीसरे चरण के मतदान में न दिखा। बल्कि पहले और दूसरे चरण के मतदान के रुझान में तो मीडिया ने यह अनुमान भी व्यक्त कि इस बार भाजपा दक्षिण भारत के केरल और तमिलनाडु में भी खाता खोल सकती है।

यदि ऐसा हुआ तो संसद में विपक्ष की शक्ति वर्तमान स्थिति से कुछ कमजोर हो सकती है। इसकी भरपाई अगले चार चरणों के मतदान से ही संभव है। जो केवल और केवल सामाजिक एकतव में सेंध लगाकर ही संभव है। यह केवल संयोग है या किसी रणनीति का अंग कि सैम पित्रोदा का वक्तव्य तीसरे चरण के मतदान के तुरन्त बाद आया । इस वक्तव्य में अँग्रेजों के उसी षड्यंत्र की झलक है जो उन्होंने भारत में अपनी जड़ों को जमाने के लिये किया था। उनकी घोषित नीति थी- बाँटो और राज करो। इसी षड्यंत्र के अंतर्गत उन्होंने विभाजन के बीज बोये थे।

अपनी डिवाइड एण्ड रूल थ्योरी में अंग्रेजों ने जो बिन्दु उठाये थे, ठीक वही बिन्दु सैम पित्रोदा के वक्तव्य में हैं। अंग्रेजों ने सबसे पहले आर्यों को हमलावर बताया था और उन्हें यूरोपीय नस्ल से जोड़ा था दक्षिण भारत को उत्तर भारत से अलग बताया और वनवासियों को अफ्रीकन नस्ल से जोड़ा था। अपनी सत्ता की जड़े जमाने के लिये अँग्रेजों ने समाज को बाँटने का काम केवल भारत में नहीं किया। पूरी दुनियाँ में किया, वे जहाँ गये वहाँ किया। अमेरिका और अफ्रीका में तो रंग के आधार पर कानून भी बनाये थे। दक्षिण अफ्रीका में गाँधीजी ने सबसे पहला आँदोलन रंग भेद के विरुद्ध ही किया था।

भारत में सामाजिक विभाजन को गहरा करने के लिये अँग्रेजों ने जाति, धर्म और क्षेत्र को आधार बनाया। इसी आधार पर सेना गठित की और जेल मैनुअल बनाया। अधिकांश प्रांतों में दो रेजिडेंट बनाई गई। जैसे पंजाब रेजिमेंट भी और सिक्ख रेजीडेंट भी, राजस्थान रेजिमेंट भी और राजपूताना राइफल्स भी, मराठा रेजिमेंट भी और महार रेजिमेंट भी। अंग्रेजों ने धर्म के आधार पर मुस्लिम रेजिमेंट भी बनाई थी। सबकी भर्ती की प्राथमिकता में अंतर था। भारत में अंग्रेजों जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र, रंग और कदकाठी के आधार बोई गई इस विष वेल में वामपंथी विचारकों ने खाद पानी देकर बनाये रखा। अंग्रेजी षड्यंत्र और वामपंथी कुतर्कों की पूरी झलक सैम पित्रोदा के बयान में है।

इस वक्तव्य के बाद तूफान तो उठना था। चूँकि यह वक्तव्य न केवल भारतीय सामाजिक संरचना और साँस्कृतिक अवधारणाओं के विरुद्ध है अपितु संविधान की भावना के भी विरुद्ध है। भारतीय वाङ्मय पूरे विश्व को एक कुटुम्ब मानता है। दक्षिण भारत की धरती का विकास उत्तर भारत में जन्में भगवान परशुराम जी ने किया और दक्षिण भारत में जन्में आदि शंकराचार्य ने पूरे भारत में वैदिक पीठ स्थापित किये। भगवान नारायण का निवास दक्षिण के महासागर में है और भगवान शिव का निवास उत्तर के हिमालय पर। कैलाश पर निवास करने वाले शिवजी के लिये एक प्रार्थना है- कर्पूर गौरम् करुणावतारम् अर्थात वे कपूर के समान गौरवर्ण हैं।

दक्षिण के महासागर में निवास करने वाले नारारण के लिये प्रार्थना है- मेघवर्णम् शुभांगम् अर्थात वे बादलों के समान काले हैं। यदि दो ईश्वर अलग-अलग रंग के हैं। राम सांवले हैं और लक्ष्मण गोरे, कृष्ण काले हैं तो बलराम गोरे। भारत में न तो रंग का कोई भेद है न क्षेत्र का। लेकिन विदेशी सत्ताओं ने ऐसे बीज बोये जिनका उपयोग आज भी कुछ राजनैतिक दल कर रहे हैं। सैम पित्रोदा का बयान आते ही सामाजिक क्षेत्र में गहरी प्रतिक्रिया हुई। भाजपा और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बिना कोई विलंब किये जवाबी हमला बोला। पहले तो काँग्रेस ने वक्तव्य से किनारा किया और यह कहकर अपना बचाव किया कि यह सैम पित्रोदा की निजी राय है किन्तु जब बात न बनी तो काँग्रेस नेता जयराम ने पित्रोदा के काँग्रेस से त्यागपत्र देने और पार्टी द्वारा स्वीकार करने की सूचना मीडिया को दी।

कौन था मुस्लिम शासक हसन खान मेवाती

जिसके नाम पर भाजपा हरियाणा में मांग रही वोट?

पिछले साल जुलाई के आखिर में हरियाणा के नूंह में सांप्रदायिक हिंसा भड़क उठी थी, जिसमें दो पुलिसकर्मियों समेत कुल 6 लोगों की मौत हो गई थी। इसके बाद मेवात के इस इलाके में कई दिनों तक कर्फ्यू लगाया गया था। हिंसा की शुरुआत विश्व हिन्दू परिषद और बजरंग दल के धार्मिक जुलूस के दौरान हुई थी। इस हिंसा की वजह से इलाके में हिन्दुओं और मुस्लिमों के बीच वैमनस्यता की खाई चौड़ी हो गई थी।

हालांकि, राज्य के तत्कालीन मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर ने इस साल 9 मार्च को नूंह पहुंचकर सब कुछ पटरी पर लाने की कोशिश की। उन्होंने तब राजा मेवाती की प्रतिमा का अनावरण किया था और उस दिन को शहीदी दिवस का दर्जा दिया था। खट्टर के बाद उनके उत्तराधिकारी और राज्य को मौजूदा मुख्यमंत्री नायब सिंह सेनी पिछले दिनों नूंह के पुन्हाना में एक चुनावी रैली को संबोधित करने आए थे। इस दौरान उन्होंने कहा, मैं भारत माता के लिए अपनी जान कुर्बान करने वाले हसन खान मेवाती को प्रणाम करता हूं।

केंद्रीय मंत्री और गुड़गांव से लोकसभा सीट के भाजपा उम्मीदवार राव इंद्रजीत सिंह के चुनाव प्रचार के दौरान मुख्यमंत्री ने 16वीं शताब्दी में मेवाड़ के शासक रहे राजा हसन खां मेवाती उर्फ राजा मेवाती की जमकर तारीफ की। उन्होंने नूंह को पवित्र भूमि बताते हुए कहा कि हमें इस बात पर

गर्व करना चाहिए कि राजा मेवाती ने बाबर की विशाल सेना के सामने कभी सिर नहीं झुकाया और अपने 12000 सैनिकों के साथ जंग लड़ते हुए शहीद हुए। सैनी ने पिछले मुख्यमंत्री यानी खट्टर द्वारा बड़कली चौक पर 9 मार्च को शहीजी दिवस मनाने का भी जिक्र किया और यह कहने की कोशिश की कि भाजपा राजा मेवाती की शहादत का सम्मान करने वाली पार्टी है।

हालांकि, यह पहली बार नहीं है, जब किसी हिन्दूवादी नेता ने हसन खान मेवाती की तारीफ की हो। 2015 में भी संघ प्रमुख मोहन भागवत ने राजस्थान के भरतपुर में राजा मेवाती की प्रशंसा की थी। संघ प्रमुख ने तब मेवाती को भारत माता का सच्चा सपूत बताया था और कहा था कि हसन खान मेवाती ने बाबर की सेना में शामिल होने का न्योता ठुकरा दिया था। उन्होंने मेवात के मुसलमानों से तब मेवाती जैसा देशभक्त बनने की अपील की थी।

कौन था हसन खान मेवाती?

राजा हसन खां मेवाती 16वीं सदी में मेवाड़ का शासक था। उसने 1526 में हुई पानीपत की लड़ाई में मुगल शासक बाबर के खिलाफ जंग लड़ी थी। इसके अलावा 1527 में हुए खानवा के युद्ध में भी मुगल सेना के खिलाफ हथियार उठाए थे। इसी युद्ध में लड़ते हुए वो वीरगति को प्राप्त हुए थे। राजा हसन खां मेवाती अलवर के शासक अलावल खां का पुत्र था। अलावल खां सांभरपाल की तीसरी पीढ़ी में हुआ था। हसन खां का नाता दिल्ली सुल्तान से भी था। वह इब्राहिम लोदी का मौसेरा भाई था। इब्राहिम लोदी के पिता सिकन्दर लोदी एवं अलावल खां आपस में सादू भाई थे। हसन खां अत्यन्त शूरवीर, साहसी, निडर एवं महत्वाकांक्षी शासक था।

1517 में जब इब्राहिम लोदी दिल्ली के सिंहासन पर बैठा तो मेवात के वे सात परगने जो हसन खां के पिता अलावल खां से छिन गये थे उनको इब्राहिम लोदी ने लौटा दिये और उन्हें 'शाह' की उपाधि से सम्मानित किया था। इस प्रकार राजा हसन खां मेवाती का राज्य अलवर से लेकर दिल्ली तक फैला हुआ था, जिसमें तिजारा, सरहटा, कोट कासिम, फिरोजपुर, कोटला, रेवाड़ी, तावडू, झज्जर, सोहना, गुड़गांव, बहादुरपुर, शाहपुर तथा समस्त मेवात का क्षेत्र आते थे।

आज इतनी चर्चा क्यों?

दरअसल, राजा मेवाती की चर्चा आज मेवात की राजनीति के कारण हो रही है। मेवात का इलाका हरियाणा, उत्तर प्रदेश और राजस्थान के बीच फैला हुआ है। तीनों प्रदेशों में फिलहाल भाजपा का शासन है लेकिन इन इलाकों में बसने वाली अधिकांश मुस्लिम आबादी को भाजपा का विरोधी समझा जा रहा है। इसलिए भाजपा खासकर हरियाणा बीजेपी के नेता मेवात इलाके की नूहं बेल्ट में लगातार राजा मेवाती की तारीफों के पुल बांध रहे हैं। ताकि उनकी देशभक्ति के किस्सों के बहाने मेवात खासकर नूंह के मुस्लिम मतदाताओं को समर्थन हासिल किया जा सके। बीजेपी मार्च से ही इस कोशिश में लगी है कि पिछले साल के दंगों का दाग धोया जाय। इसके लिए पूर्व मुख्यमंत्री खट्टर शहीद हसन खान मेवाती राजकीय मेडिकल कॉलेज में हसन खान मेवाती के नाम पर एक शोध पीठ की स्थापना की भी घोषणा कर चुके हैं। हालांकि, इस मेडिकल कॉलेज की स्थापना कांग्रेस सरकार में हुई थी।

नूंह में 79 फीसदी मुसलमान

हरियाणा में मुस्लिम आबादी भले ही 7 फीसदी हो लेकिन नूंह में 79 फीसदी आबादी मुस्लिम है। इसीलिए भाजपा इस इलाके के मुस्लिमों के बीच जा रही है। नूंह जिले में तीन विधानसभा क्षेत्र आते हैं। नूंह, फिरोजपुर झिरका और पुन्हाना। तीनों विधानसभा सीटें गुड़गांव लोकसभा के अंदर आती हैं और इन तीनों ही सीटों पर फिलहाल कांग्रेस के मुस्लिम विधायक हैं। ये सभी विधानसभा सीटें गुड़गांव लोकसभा सीट के तहत आती हैं, जहां से 2009 से लगातार राव इंद्रजीत सिंह जीतते आ रहे हैं। इस बार उनका मुकाबला कांग्रेस के राज बब्बर से है।

17 साल बाद सुलझी मर्डर मिस्ट्री, आरोपी ने बताया क्यों की थी महिला की हत्या?

कहते हैं कानून के हाथ बहुत लंबे होते हैं और अपराधी कहीं भी छुपा हो पुलिस कभी ना कभी उसे पकड़ ही लेती है, इसी बात को दिल्ली पुलिस ने एकबार फिर साबित कर दिखाया है। पुलिस ने हाल ही में 57 साल के एक ऐसे शख्स को गिरफ्तार किया है, जो 17 साल पहले मर्डर करके फरार हो गया था। आरोपी को दिल्ली के रोहिणी इलाके से गिरफ्तार किया गया।

पुलिस के मुताबिक आरोपी का नाम वीरेन्दर सिंह है जो कि बिहार के वैशाली जिले का रहने वाला है। उसने साल 2007 में दिल्ली के अपने किराए के मकान में 22 साल की युवती की हत्या कर दी थी और उसकी बॉडी को संदूक में ताला लगाकर भाग गया था। इस बारे में जानकारी देते हुए DCP (क्राइम) अमित गोयल ने कहा, युवती की हत्या करने के बाद आरोपी वीरेन्दर शहर से भाग गया था। हालांकि जांच के दौरान उसके साथी शंकर घोष को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया था। इसके बाद साल 2008 में एक अदालत ने उसे घोषित अपराधी बताया था।

अधिकारी ने आगे कहा कि क्राइम ब्रांच का एक असिस्टेंट सब-इंस्पेक्टर कालकाजी पुलिस स्टेशन में पोस्टेड था। वह उस इलाके का बीट अधिकारी था जहां महिला की हत्या हुई थी। DCP (पुलिस उपायुक्त) ने कहा, तबादला होने के बावजूद असिस्टेंट सब-इंस्पेक्टर रमेश ने मामले की जांच जारी रखी। उन्होंने फिर से उन लोगों के माध्यम से आरोपियों के बारे में जानकारी जुटाना शुरू कर दिया जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से देह व्यापार में शामिल थे। उन्हें पता चला कि वीरेंद्र हरियाणा के पानीपत में छिपा हुआ है। छापेमारी की गई लेकिन आरोपी का पता नहीं चल सका क्योंकि वह बार-बार अपना किराए का मकान बदल रहा था। फरवरी में सहायक ASI रमेश का तबादला क्राइम ब्रांच में कर दिया गया और उन्होंने फिर से उस मामले की जांच शुरू कर दी। पुलिस उपायुक्त ने कहा, इस बार वह आरोपी का मोबाइल नंबर ढूंढने में सफल रहे और किरायेदारों द्वारा दी जाने वाली जानकारी से वीरेंद्र की पहचान की गई। वीरेंद्र को रोहिणी के विजय विहार इलाके से पकड़ा गया। पूछताछ में पता चला कि आरोपी 1991 में दिल्ली आया था और चितरंजन पार्क इलाके में रहने लगा। वह टैक्सी चालक के तौर पर काम करता था। उस दौरान वह अलग-अलग लोगों के संपर्क में आया और उसे देह व्यापार के बारे में पता चला। DCP ने बताया कि 2001 में वीरेंद्र आसानी से पैसा कमाने के लिए देह व्यापार में शामिल हो गया। उन्होंने बताया कि वह पश्चिम बंगाल से युवा लड़कियों को लाता था और उनका इस्तेमाल देह व्यापार में करता था।

आरोपी ने पूछताछ में पुलिस को बताया कि वो पीड़िता को 10 हजार रुपए में खरीदकर लाया था। 4 जून 2007 को वारदात वाले दिन पीड़िता ने तबीयत खराब होने की वजह से उसके साथ जाने से मना कर दिया, इसी बात से नाराज होकर आरोपी ने उसकी हत्या कर दी थी। डेडबॉडी अगले दिन बरामद हुई थी।

मोदी ने रोड शो में भगवा रंग का कुर्ता और सफेद रंग की सदरी पहनी

वाराणसी। वाराणसी संसदीय सीट से लगातार तीसरी बार नामांकन करने शहर में पहुंचे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मेगा रोडशो किया। भगवामय शहर में भाजपा की ओर से आयोजित रोडशो में शामिल होने के लिए सड़कों और गलियों से जनसैलाब उमड़ पड़ा। बीएचयू के सिंह द्वार लंका पर स्थित महामना मदन मोहन मालवीय के विशाल प्रतिमा पर माल्यार्पण कर प्रधानमंत्री मोदी ने रोड शो की शुरुआत की। रोड शो में शामिल प्रधानमंत्री ने भगवा रंग का कुर्ता और सफेद रंग की सदरी पहन रखी थी। रोड शो के रथ पर प्रधानमंत्री मोदी के साथ प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र चौधरी भी उत्साह से लोगों का अभिवादन कर रहे थे।

प्रधानमंत्री का रथ लाखों के हुजूम के बीच आगे बढ़ा तो लोगों ने शाही अंदाज में विजेता नायक की तरह प्रधानमंत्री का शंख ध्वनि, पुष्पवर्षा के बीच भव्य स्वागत किया। रोड शो में प्रधानमंत्री मोदी के प्रति लोगों की दीवानगी एक बार देखने को मिली। हर-हर महादेव, मोदी-मोदी के गगनभेदी नारों से आसमान गुंजायमान रहा। प्रधानमंत्री लोगों का अभिवादन हाथ जोड़ कर विनम्रता से स्वीकार करते रहे। यह देख भाजपा कार्यकर्ता ढोल नगाड़े बजाकर गगनभेदी मोदी-मोदी, नारेबाजी के बीच गुलाब की पंखुड़ियां प्रधानमंत्री पर बरसाते रहे। पार्टी की महिला कार्यकर्ताओं और नागरिकों का उत्साह देखकर प्रधानमंत्री का काफिला भी धीरे-धीरे आगे बढ़ता रहा। बीएचयू प्रवेश द्वार से ही प्रधानमंत्री के रोड-शो में 500 युवा और 500 मातृशक्ति आगे-आगे चल रहीं थीं। बीएचयू सिंह द्वार से रविदास गेट, अस्सी, शिवाला, मदनपुरा, गोदौलिया होते विश्वनाथ धाम के प्रवेश द्वार संख्या-चार पर पहुंच कर प्रधानमंत्री ने रोड शो का समापन किया। 05 किलोमीटर के दायरे में हुए मेगा रोड शो में लघु भारत और उत्तर प्रदेश की संस्कृति की झलक दिखी। पूरे रास्ते शंखनाद, डमरुओं की निनाद और मंत्रोच्चार के बीच प्रधानमंत्री का स्वागत लोग करते रहे। इसमें बच्चे और युवतियां भी पीछे नहीं रहीं। संकरी सड़क के दोनों छोर पर स्थित मकानों के बारजे और छत से महिलाएं प्रधानमंत्री के उपर पुष्पवर्षा करती रहीं। लोगों का अपनापन देख प्रधानमंत्री आह्लादित दिखे।

रोड शो में ढोल-नगाड़े की थाप पर जगह-जगह सांस्कृतिक कार्यक्रम, लोकनृत्य, लोकगीत गाते बनारस के कलाकार व वैदिक मंत्रोच्चार करते हुए बटुक भी अभिनंदन के लिए डटे रहे। वीवी सुंदरम शास्त्री के नेतृत्व में सोनारपुरा, पांडेय हवेली मार्ग पर महिलाओं ने भरतनाट्यम की प्रस्तुति दी। मार्ग में वेदमंत्रों के साथ दक्षिण भारत के शहनाई के रूप में शुमार नादश सरम तो बंगाली समाज की धुनकी और ढाक वाद्ययंत्र भी गूंजता रहा। डांडिया और गरबा की भी झलक दिखी। भारतरत्न उस्ताद बिस्मिल्लाह खां के परिवार के सदस्यों ने मदनपुरा के पास शहनाई वादन से अलग माहौल बनाया।

प्रधानमंत्री मोदी के स्वागत के लिए 11 बीट के अन्तर्गत 100 स्वागत प्वाइंट बनाए गए। स्वागत प्वाइंट पर मराठी, गुजराती, बंगाली, माहेश्वरी, मारवाड़ी, तमिल, पंजाबी आदि समाज के लोग अपनी परंपरागत वेशभूषा में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर पुष्पवर्षा कर स्वागत के लिए डटे रहे।

इस दौरान 'विकास भी, विरासत भी', हमार काशी-हमार मोदी के पोस्टर भी लोग उत्साह से लहराते दिखे।

पीएम मोदी को मिल चुका है बहुमत, आगे 400 पार की लड़ाई-अमित शाह

बनगांव। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने पश्चिम बंगाल के बनगांव में चुनावी जनसभा को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि अब तक हुए मतदान में ही भाजपा को पूर्ण बहुमत हासिल हो चुका है। शाह ने कहा, 4 चरण के मतदान पूरे हो गए हैं। 380 सीटों का चुनाव पूरा हो गया है। बंगाल में 18 सीटों का चुनाव पूरा हो गया है। आज में बता कर जाता हूं कि 380 में से पीएम मोदी 270 सीट लेकर पूर्ण बहुमत प्राप्त कर चुके हैं। आगे की लड़ाई 400 पार करने की है। उन्होंने रैली में आए लोगों से सवाल करते हुए कहा, बंगाल के लोगों बताओ कि 400 पार कराओगे क्या। जोर से बोलो कराओगे क्या। बंगाल में 30 से ज्यादा सीटें जीताओगे क्या।

बंगाल के मतदाताओं से 42 में से 30 से अधिक सीटें भाजपा के लिए सुनिश्चित करने की अपील करते हुए अमित शाह ने कहा, ममता दीदी आप तब खुश थीं जब आपने EVM वोटिंग के जरिए सत्ता हासिल की। मुख्यमंत्री के रूप में अपने तीन कार्यकाल पूरे किए, लेकिन अब आप आसन्न हार की आशंका के कारण उन्हीं इलेक्ट्रॉनिक मशीनों को दोष दे रही हैं। पीएम मोदी के नेतृत्व में बंगाल में अगली सरकार भाजपा की बनने का दावा करते हुए उन्होंने कहा, ममता दीदी अब ईवीएम के बारे में शिकायत कर रही हैं। मैं कहूंगा, जब आप मुख्यमंत्री बनीं, तब भी ईवीएम वही थीं। आज जब आपके जाने की बारी है, तो आप ईवीएम पर सवाल उठा रहे हैं।

शाह ने कहा-ममता दीदी झूठ बोल रही हैं कि...

अमित शाह ने पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री व तृणमूल कांग्रेस प्रमुख ममता बनर्जी पर आज जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि ममता दीदी झूठ बोल रही हैं कि CAA के तहत नागरिकता के लिए जो भी अर्जी करेगा, उसे तकलीफ आएगी। शाह ने कहा, मतुआ समाज के लोगों को मैं आश्वस्त करने आया हूं कि किसी को कोई तकलीफ नहीं आएगी। नागरिकता भी मिलेगी और देश में सम्मान के साथ जी भी पाओगे। दुनिया की कोई ताकत मेरे शरणार्थी भाइयों को भारत का नागरिक बनने से रोक नहीं सकती, ये नरेंद्र मोदी जी का वादा है।

लक्ष्मी भंडार योजना में 100 रुपये और बढ़ाएंगे, बोले शाह

गृह मंत्री ने कहा, ममता दीदी कहती हैं कि भाजपा वाले आएंगे, तो लक्ष्मी भंडार योजना बंद कर देंगे। मैं आपको बताकर जाता हूं कि भाजपा कोई भी योजना बंद करने वाली नहीं है। हम लक्ष्मी भंडार योजना में 100 रुपये और बढ़ाएंगे। उन्होंने कहा कि चिटफंड घोटाले वाले, शिक्षक भर्ती घोटाले वाले, नगरपालिका भर्ती घोटाले वाले, राशन घोटाले वाले, गाय और कोयला तस्करी करने वाले व पैसे लेकर सवाल करने वालों को जेल जाने की तैयारी कर लेनी चाहिए। शाह ने साफ तौर पर कहा कि किसी को छोड़ा नहीं जाएगा।

गाय चोर, कोयला चोर, नौकरी चोर सब के सब जेल जाएंगे

भाजपा नेता ने कहा कि ममता दीदी और राहुल बाबा को 22 जनवरी को राम लला के अभिषेक में शामिल होने के लिए निमंत्रण दिया गया था। लेकिन, दोनों को अपने वोट बैंक का डर था और वे इस समारोह में शामिल नहीं हुए। जो कि 70 साल के संघर्ष के बाद आयोजित किया गया था। उन्होंने कहा, मोदी जी ने बंगाल के सभी गरीबों को घर, शौचालय, 5 किलो चावल और 5 लाख रुपये का चिकित्सा बीमा प्रदान किया है। ममता बनर्जी का कहना है कि तृणमूल कांग्रेस गरीबों को चावल दे रही है। असल में यह चावल नरेंद्र मोदी भेज रहे हैं। शाह ने कहा कि ममता दीदी पूछ रही हैं, उन्हें जेल क्यों भेजा जा रहा है? मैं कहना चाहूंगा कि यह तो बस शुरुआत है। गाय चोर, कोयला चोर, नौकरी चोर और सवाल पूछने के बदले पैसे लेने वालों को जेल जाने के लिए तैयार रहना चाहिए।

मानवाधिकार हनन के छह मामलें में आयोग ने लिया संज्ञान

भोपाल। मानव अधिकार हनन के छह मामले में मध्यप्रदेश मानव अधिकार आयोग ने संज्ञान लेते हुए संबंधित अधिकारियों से जवाब-तलब किया है।

आयोग की ओर से दी गई जानकारी के अनुसार राजधानी भोपाल शहर के बिलखिरिया इलाके में मौजूद घोड़ा पछाड़ डेम में तीन युवकों की डूबने से मृत्यु होने के मामले कलेक्टर से मामले की जांच कराकर की गई कार्रवाई के सम्बन्ध में मृतकों के वैध उत्तराधिकारी को शासन की योजना/नियमानुसार देय आर्थिक मुआवजा राशि के सम्बन्ध में तीन सप्ताह में प्रतिवेदन मांगा है।

मतदान के लिए दिखा उत्साह

उज्जैन। लोकसभा निर्वाचन 2024 के तहत सोमवार 13 मई को जिले के सातों विधानसभा क्षेत्रों में शांतिपूर्वक मतदान हुआ। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री नीरज कुमार सिंह के निर्देशन में जिले के 1844 मतदान केंद्रों पर मतदाताओं की सुविधाओं के लिए बेहतर व्यवस्थाएं की गई।

कलेक्टर श्री सिंह एवं पुलिस अधीक्षक श्री शर्मा ने सुबह से ही मतदान केंद्रों पर पहुंचकर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने उज्जैन उत्तर, उज्जैन दक्षिण, घट्टिया विधानसभा क्षेत्रों का भ्रमण कर मतदान केंद्रों का बारीकी से निरीक्षण किया और अधिकारियों को स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण मतदान संपन्न कराने के लिए पाबंद किया। मतदान करने के लिए युवाओं सहित बुजुर्गों एवं दिव्यांगजनों में भारी उत्साह देखा गया। सभी विधानसभा क्षेत्रों में आदर्श मतदान केंद्र, महिला बूथ और दिव्यांग मतदाताओं के लिए केंद्र भी बनाए गए।

कलेक्टर एवं एसपी ने किया मतदान केंद्रों का सघन निरीक्षण

कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री नीरज कुमार सिंह एवं पुलिस अधीक्षक श्री प्रदीप शर्मा द्वारा सुबह से लेकर मतदान समाप्ति तक मतदान केंद्रों का सघन निरीक्षण किया गया। उन्होंने उज्जैन उत्तर व दक्षिण, घट्टिया आदि विधानसभाओं का सघन भ्रमण किया। इस दौरान उन्होंने मतदान सम्पन्न कराने वाले अधिकारी/कर्मचारियों को व्यवस्थित ढंग से कार्यवाही संपादित करने के निर्देश दिए। उन्होंने पीठासीन अधिकारी, सेक्टर अधिकारी तथा कार्यपालिक मजिस्ट्रेट्स को शांतिपूर्ण ढंग से मतदान सम्पन्न कराने के लिए आयोग के निर्देशानुसार सभी आवश्यक कदम उठाने के निर्देश दिए।

अधिकारियों ने भी किया मतदान केंद्रों का निरीक्षण

निर्वाचन के सुचारु संचालन के लिए जिला पंचायत सीईओ श्री मृणाल मीना, अपर कलेक्टर श्री अनुकूल जैन, कार्यकारी निदेशक एमपीआईडीसी श्री राजेश राठौर, सीईओ यूडीए श्री संदीप सोनी ने भी मतदान केंद्रों का सतत निरीक्षण किया। निर्वाचन प्रक्रिया सुव्यवस्थित ढंग से पूर्ण कराने में सभी सहायक रिटर्निंग अधिकारियों द्वारा भी सक्रिय भूमिका निभाई गई। कलेक्टर श्री सिंह द्वारा व्यवस्थाओं की निगरानी के लिए जिले में पदस्थ अपर कलेक्टर्स को विधानसभाएं आवंटित की गई थी।

नव-मतदाताओं, बुजुर्गों एवं दिव्यांगों ने उत्साह के साथ किया मतदान

लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं को मजबूत बनाए रखने में घर के युवा, महिलाएं, वृद्धजन व दिव्यांगजन भी किसी से पीछे नहीं रहे। दिव्यांगजनों ने मतदान केंद्रों पर उपलब्ध व्हील चेयर की सुविधा का लाभ लेते हुए उत्साह से अपने मताधिकार का उपयोग किया।

सभी मतदान केंद्रों पर वृद्ध एवं दिव्यांग मतदाताओं के लिए व्हील चेयर्स की व्यवस्था की गई थी।

विधानसभा क्षेत्र उज्जैन उत्तर के बहादुरगंज निवासी 100 वर्षीय श्यामा बाई ने सोमवार को उनके क्षेत्र के मतदान स्थल क्रमांक 78 भाटी राजपूत धर्मशाला लक्कड़गंज में जाकर मतदान किया। इतनी आयु के बावजूद मतदान के प्रति उनके उत्साह में बिल्कुल भी कमी नहीं आई। श्यामा बाई स्वयं चलकर मतदान केंद्र तक गई और मतदान किया। आदर्श मतदान केंद्र क्रमांक 103 सेठी नगर में मतदान करने के लिए आए दिव्यांग धनुष व्यास ने बताया कि वे पैरों से दिव्यांग हैं । आज वे अपने मत का प्रयोग करने के लिए यहां आए हैं। उन्होंने बताया कि मतदान केंद्र पर दिव्यांग जनों के लिए बहुत अच्छी व्यवस्था की गई है। मतदान केंद्र तक वे ट्राई साइकिल से आए उसके बाद उन्हें केंद्र में मौजूद कर्मचारियों द्वारा व्हील चेयर पर बैठा कर मतदान के लिए ले जाया गया। मतदान केंद्र पर दिव्यांग जनों के लिए रैंप की व्यवस्था की गई थी। श्री धनुष व्यास ने मतदान केंद्र पर की गई व्यवस्थाओं की प्रशंसा की और सभी से मतदान की अपील की।

बीमारी और अधिक उम्र भी नहीं रोक पाई मतदान केन्द्र पहुंचने से

उज्जैन दक्षिण मतदान केन्द्र क्रमांक 193 में सेना के रिटायर्ड अधिकारी 82 वर्षीय कर्नल हुकुमचंद जैन और उनकी पत्नी 78 वर्षीय श्रीमती वेरामनी जैन ने मतदान किया। कर्नल हुकुमचंद जैन और उनकी धर्मपत्नी विगत कई दिनों से बीमार हैं। मतदान दिवस पर उनकी मतदान करने की इच्छाशक्ति के आगे बीमारी भी उन्हें मतदान केन्द्र जाने से नहीं रोक पाई। इसी प्रकार पिपली नाका निवासी 67 वर्षीय गंगाबाई ने भी अपने बेटे के साथ पहुंचकर मतदान किया।

अनेक मतदान केन्द्रों में मतदान केन्द्र में आने वाले मतदाताओं का स्वागत ढोज बाजे के साथ किया गया। मतदान केंद्रों पर तिलक लगाकर, तो कहीं फूल माला पहनाकर मतदाताओं का स्वागत किया गया। अनेक मतदान केन्द्रों को फूल, रंगोली, पेंटिंग और तोरण से सजाया गया। मतदाताओं के स्वागत के लिए स्वागत द्वार बनाए गए। अनेक स्थान पर गर्मी को देखते हुए टेंट के साथ ही कारपेट भी बिछाया गया। मतदाताओं के बैठने के लिए कुर्सियों की भी व्यवस्था की गई तथा पीने के लिए ठन्डे पानी की व्यवस्था भी की गई।

कमिश्नर, कलेक्टर, एसपी सहित अन्य अधिकारियों ने किया मतदान

लोकसभा निर्वाचन 2024 के तहत 13 मई को उज्जैन संभागायुक्त श्री संजय गुप्ता, कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री नीरज कुमार सिंह और पुलिस अधीक्षक श्री प्रदीप शर्मा ने कृषि कार्यालय कोठी रोड मतदान केंद्र क्रमांक 204 पहुंचकर अपने मताधिकार का प्रयोग किया। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री मृणाल मीना, उपायुक्त श्री रणजीत कुमार, निगम आयुक्त श्री आशीष पाठक सहित अन्य अधिकारियों ने भी मतदान दिया।

कांग्रेस डूबने वाली है, अपने कर्मों से समाप्त हो रही है-मुख्यमंत्री

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि कांग्रेस पार्टी अंग्रेजों की पोषक है। वह अपने कर्मों से ही समाप्त हो रही है। कांग्रेस पार्टी में जो समझदार व्यक्ति हैं, वे पार्टी छोड़कर भाजपा में शामिल हो गए हैं, क्योंकि उन लोगों को पता है कि कांग्रेस पार्टी डूबने वाली है। कांग्रेस अपने कर्मों से समाप्त हो रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव भाजपा के प्रदेश कार्यालय में हुई चुनाव प्रबंधन की बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी के गुरू सैम पित्रोदा विरासत टैक्स लगाने की बात करते हैं, मणिशंकर अय्यर पाकिस्तान की भाषा बोलते हैं। उनकी पार्टी के महाराष्ट्र के नेता नाना पटोले कहते हैं कि राम मंदिर को अपवित्र कर दिया, हम राम मंदिर को गंगाजल से धोएंगे।

हमारे देश की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु के अयोध्या में भगवान श्रीराम के दर्शन करने के पश्चात कांग्रेस के नेता राम मंदिर को गंगाजल से धोने की बात करके राष्ट्रपति के साथ देश के अनुसूचित जनजाति समाज का अपमान किया है। इस तरह की मानसिकता के लोग कांग्रेस को खुद ही समाप्त कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि सोमवार को चौथे चरण में मालवा-निमाड़ की आठ लोकसभा सीटों पर मतदान होने जा रहा है। भाजपा कार्यकर्ता पूरी ईमानदारी से अपने कार्य कर रहे हैं। चुनाव प्रबंधन में लगे पार्टी के सभी कार्यकर्ताओं और संगठन की मेहनत से मालवा-निमाड़ की आठ सहित मध्यप्रदेश की सभी 29 सीटों पर भाजपा ऐतिहासिक बहुमत से चुनाव जीत रही है। नरेन्द्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने के लिए मध्यप्रदेश के मतदाता भाजपा को आशीर्वाद प्रदान कर रहे हैं।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा ने बैठक में कहा कि मध्यप्रदेश में दूसरे चरण के चुनाव में मतदान प्रतिशत कम हुआ था, लेकिन भाजपा के बूथ कार्यकर्ताओं ने अथक मेहनत की और तीसरे चरण में अच्छा मतदान प्रतिशत रहा। मालवा व निमाड़ की जनता से हमेशा से भाजपा को अपना आशीर्वाद प्रदान किया है। चुनाव प्रबंधन में लगीं सभी 36 टोलियों ने बहुत मेहनत की है। अच्छे चुनाव प्रंधन अैर पार्टी के शीर्ष नेतृत्व के मार्गदर्शन और बूथ कार्यकर्ताओं की मेहनत से भाजपा मध्यप्रदेश की सभी 29 लोकसभा सीटों पर ऐतिहासिक विजय प्राप्त करने जा रही है। उन्होंने कहा कि नरेन्द्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने के लिए मध्यप्रदेश की जनता मतदान कर रही है। कार्यकर्ताओं की अथक मेहनत से वर्ष 2019 में हुए लोकसभा चुनाव में भाजपा को 58 प्रतिशत वोट मिले थे, इस लोकसभा चुनाव में पार्टी का आठ से दस प्रतिशत वोट शेयर बढ़ने जा रहा है। चुनाव प्रबंध की टीम ने बहुत मेहनत की है। मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए भी कई उल्लेखनीय कार्य किए हैं। सभी की मेहनत से पार्टी ऐतिहासिक सफलता प्राप्त करेगी। अब हम सभी को कल चौथे चरण के मतदान में मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए कार्य करना है। मतदान प्रतिशत बढ़ाने सुबह 6 बजे से ही कार्यकर्ता मतदाताओं को वोट देने के लिए पार्टी कार्यकर्ता खासकर युवा कार्यकर्ता लोगों को घर से निकलकर मतदान करने जाने के लिए प्रेरित करें।

लोकसभा चुनाव के प्रदेश प्रभारी डॉ. महेन्द्र सिंह ने कहा कि मैंने कई राज्यों में प्रवास किया है। कई राज्यों में चुनाव कार्य देखा है, लेकिन संगठन और कामकाज की दृष्टि से मध्यप्रदेश देश में नंबर वन राज्य है। यहां बूथ अध्यक्ष से लेकर प्रदेश अध्यक्ष तक सभी अपने कार्यों को बहुम ईमानदारी व निष्ठा के साथ कार्यों को निर्वहन करते हैं। इतने बड़े राज्य में लोकसभा का पूरा चुनाव संपन्न हो रहा है, संगठन और चुनाव प्रबंधन सभी ने अपने कार्यों को इतने अच्छे से निर्वहन किया है कि दूसरे राज्यों को प्रेरणा लेनी चाहिए। एक कार्यकर्ता कैसा होना चाहिए, उसमें क्या गुण होना चाहिए, यह मप्र के कार्यकर्ताओं में अपने कार्यों से बताया है। वास्तविक कार्यकर्ता कैसा होना चाहिए, यह मप्र के कार्यकर्ताओं से सीखना चाहिए। यहां चुनाव प्रबंधन से लेकर संगठन सभी में आदर्श व्यवस्था है।

लोकसभा चुनाव के प्रदेश सह प्रभारी सतीश उपाध्याय ने कहा कि एक पूर्व तैयारी होती है, दूसरी पूर्ण तैयारी होती है। मध्यप्रदेश भाजपा संगठन ने दोनों बहुत अच्छे से किया है। यहां मतदाता पर्ची बांटने से लेकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की रैली व सभाओं के लिए चुनाव प्रबंधन में लगी सभी 36 टोलियों ने बहुत अच्छा कार्य किया। पार्टी के शीर्ष नेतृत्व के मार्गदर्शन में भाजपा कार्यकर्ताओं की मेहनत से भाजपा प्रदेश की सभी 29 लोकसभा सीटें जीत रही है। युवाओं, महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने और सोशल मीडिया के बेहतर उपयोग से मध्यप्रदेश में भाजपा का दस प्रतिशत वोट शेयर बढ़ाने का लक्ष्य भी प्राप्त होगा। बैठक का संचालन चुनाव प्रबंधन समिति के संयोजक हेमंत खण्डेलवाल ने किया। मंच पर पार्टी के प्रदेश महामंत्री भगवानदास सबनानी एवं प्रदेश कोषाध्यक्ष अखिलेश जैन उपस्थित रहे। बैठक का आभार प्रदेश मंत्री रजनीश अग्रवाल ने माना। बैठक के दौरान चुनाव प्रबंधन की विभिन्न टोलियों के सदस्यगण उपस्थित रहे।

85 वर्षीय महिला ने वोट डाला

उज्जैन। अधिक से अधिक मतदाता मतदान केंद्र तक पहुंचे इस हेतु 13 मई को सामाजिक कार्यकर्ता महेंद्र कटियार, दिनेश टाटा व कुशवाहजी ने कई लोगों को प्रोत्साहित किया। महेंद्र कटियार के अनुसार आनंद नगर निवासी 85 वर्षीय महिला पुनिया बाई का वोट डलवाया। इसके साथ ही अन्य लोगों को मतदान हेतु जागरूक किया।

ट्यूमर से पीड़ित होने के बावजूद किया मतदान

उज्जैन। ट्यूमर जैसी गंभीर बीमारी से पीड़ित डॉ. सीमा भारद्वाज सेवानिवृत्त शासकीय महाविद्यालय जंतु विज्ञान विभागाध्यक्ष ने व्हील चेयर का उपयोग करते हुए अपने मताधिकार का उपयोग कर अपने नैतिक दायित्व को समझा।

21 साल की कोशिशों के बाद भारत को मिला चाबहार बंदरगाह

ईरान और भारत के बीच चाबहार बंदरगाह के विकास और प्रबंधन को लेकर समझौता हो गया है। इस समझौते के लिए बातचीत 2003 में शुरू हुई थी। भारत को ईरान का चाबहार बंदरगाह के 10 साल तक इस्तेमाल के अधिकार मिल गए हैं। भारत इस बंदरगाह का विकास करेगा और 10 साल तक इसका प्रबंधन करेगा। पाकिस्तान से लगती ईरान की दक्षिण-पश्चिमी सीमा पर स्थित चाबहार बंदरगार को समुद्री व्यापार के लिए एक अहम और रणनीतिक जगह माना जाता है। ईरान के शहरी विकास मंत्रालय ने बताया कि समझौते के तहत भारत की इंडिया पोर्ट्स ग्लोबल लिमिटेड (आईपीजीएल) कंपनी चाबहार में 37 करोड़ डॉलर का निवेश करेगी और बंदरगाह का ढांचागत विकास करने के लिए रणनीतिक उपकरण उपलब्ध कराएगी। सोमवार को भारत के जहाजरानी मंत्री सर्वानंद सोनोवाल और ईरान के शहरी विकास मंत्री मेहरदाद बजरपाश ने समझौते पर दस्तखत किए। बजरपाश ने इस मौके पर कहा, इलाके में परिहवन के विकास में चाबहार एक अहम केंद्र बन सकता है। हम इस समझौते से बेहद खुश हैं और भारत पर हमें पूरा भरोसा है। सोनोवाल ने कहा कि भारत और ईरान क्षेत्रीय बाजारों तक पहुंच के दोनों देशों के हितों को देखते हुए चाबहार बंदरगाह के हरसंभव विकास को लेकर बहुत उत्साहित हैं।

उन्होंने कहा, लंबी अवधि का यह समझौता भारत और ईरान के बीच सदा से रहे भरोसे और प्रभावशाली साझेदारी का प्रतीक है। 2003 से जारी थी कोशिशें इस समझौते पर भारत और ईरान के बीच लगभग 20 साल से बातचीत चल रही थी। 2003 में भारत ने ईरान से चाबहार बंदरगाह के विकास में हिस्सेदारी पर बातचीत शुरू की थी। अगस्त 2012 इस समझौते को लेकर भारत, ईरान और अफगानिस्तान के प्रतिनिधियों के बीच बैठक हुई जिसके बाद जनवरी 2013 में भारत ने चाबहार में 10 करोड़ डॉलर के निवेश पर सहमति दी थी। 2016 में भारत ने चाबहार बंदरगाह के लिए 50 करोड़ डॉलर उपलब्ध कराने पर सहमति दी थी। तब भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और तत्कालीन ईरानी राष्ट्रपति हसन रूहानी की मौजूदगी में सहमति पत्र पर दस्तखत भी हो गए थे।

लेकिन यह समझौता सिरे नहीं चढ़ पाया क्योंकि ईरान और अमेरिका के बीच 2015 में हुआ ऐतिहासिक परमाणु समझौता 2018 में डॉनल्ड ट्रंप के राष्ट्रपति बनने के बाद टूट गया और अमेरिका ने ईरान के साथ व्यापार पर प्रतिबंध लगा दिए। अमेरिका नाखुश अमेरिका इस समझौते को लेकर बहुत खुश नहीं रहा है लेकिन 2021 में अफगानिस्तान में तालिबान द्वारा तख्तापलट किए जाने के बाद उसने इसे स्वीकार कर लिया था। हालांकि सोमवार को उसने चेतावनी दी कि भारतीय कंपनियों पर प्रतिबंध लगाए जा सकते हैं।

अब हाशिये पर जा रही बहुजन समाज पार्टी

बहुजन समाज पार्टी (बसपा) सुप्रीमो मायावती ने अपने भतीजे आकाश आनंद को अपनी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक के पद से हटा दिया है। छह महीने पहले ही उन्होंने आकाश को धूमधाम से अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था। उन्होंने कहा कि आकाश तब तक उनके राजनीतिक उत्तराधिकारी नहीं बन सकते, जब तक वे पूरी तरह परिपक्व नहीं हो जाते। आकाश आनंद बीते उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव के शुरुआती दो चरणों में बसपा के प्रचार अभियान का मुख्य चेहरा थे। उनके भाषणों में भाजपा और समाजवादी पार्टी (सपा) पर तीखे हमले किए गए थे। अप्रैल में सीतापुर में एक चुनावी रैली के दौरान कथित रूप से आपत्तिजनक भाषा का इस्तेमाल करने के लिए उनके खिलाफ मामला भी दर्ज किया गया था। मायावती को लगता है कि ये भाषण पार्टी द्वारा निर्धारित नियमों और नीतियों से भटक गए थे। मायावती के इस तरह के अचानक फैसले पहले भी देखे गए हैं लेकिन महत्वपूर्ण सवाल यह है कि इसका पार्टी और उनके दलित आंदोलन पर क्या असर होगा।

बसपा के संस्थापक कांशीराम ने अपने परिवार को पार्टी से दूर रखा था और मायावती को उनके नेतृत्व कौशल के कारण ही अपना उत्तराधिकारी चुना था। इस रणनीति ने पार्टी को 2007 में उत्तर प्रदेश में अपने दम पर सत्ता दिलाई, जहाँ दलित समाज आबादी का लगभग 21 फीसदी हिस्सा हैं। मायावती के इस तरह के अचानक फैसले पहले भी देखे गए हैं लेकिन महत्वपूर्ण सवाल यह है कि इसका पार्टी और उनके दलित आंदोलन पर क्या असर होगा। बसपा के संस्थापक कांशीराम ने अपने परिवार को पार्टी से दूर रखा था और मायावती को उनके नेतृत्व कौशल के कारण ही अपना उत्तराधिकारी चुना था। इस रणनीति ने पार्टी को 2007 में उत्तर प्रदेश में अपने दम पर सत्ता दिलाई, जहाँ दलित समाज आबादी का लगभग 21 फीसदी हिस्सा हैं।

हालांकि, मायावती बसपा को एक व्यापक बहुजन समाज की पार्टी के रूप में विकसित करने में विफल रहीं। पार्टी के कई संस्थापक नेता, जो ओबीसी, अल्पसंख्यक और दलित समुदायों का प्रतिनिधित्व करते थे, मायावती के नेतृत्व शैली से असंतुष्ट होकर पार्टी छोड़ गए। आज बसपा अपने पुराने अखिल भारतीय दलित संगठन के रूप में अपनी पहचान लगभग खो चुकी है, भले ही मायावती कहने को तो आज भी देश की सबसे बड़ी दलित नेता बनी हुई हैं।

मायावती द्वारा बसपा के आंदोलनकारी चरित्र को नजरअंदाज करने और अपने परिवार के भीतर नेतृत्व को मजबूत करने के उनके फैसले ने पार्टी के विकास को नुकसान तो पहुँचाया ही है। दुर्भाग्य से, कई अन्य क्षेत्रीय राजनीतिक दलों ने भी यही रास्ता अपनाया है, जिनमें वे दल भी शामिल हैं जो वैचारिक रूप से शक्तिशाली आंदोलनों से उभरे थे। इसमें तमिलनाडु में द्रविड़ आंदोलनों से विकसित हुई डीएमके और उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी और बिहार की राष्ट्रीय जनता दल शामिल है, जो लोहियावादी समाजवादी परंपरा और मंडल राजनीति की विरासत का दावा करती हैं। बसपा के मामले में पार्टी के पतन को नए दलित नेताओं के उदय ने भी तेज किया है। पार्टी का वोट शेयर लगातार गिर रहा है। इस बात की संभावना कम ही है कि 2024 के लोकसभा चुनाव में बसपा उत्तर प्रदेश में कोई उल्लेखनीय परिणाम हासिल कर सकेंगी। अब उत्तर से पंजाब की ओर चलते हैं। बसपा की ताजा ताकत को जानने के लिए पंजाब के समीकरणों को जानना जानना जरूरी है, क्योंकि बहुजन समाज पार्टी के संस्थापक स्वर्गीय कांशीराम जी पंजाब के रोपड़ शहर से ही थे। आप जब चंडीगढ़ से रोपड़ शहर में प्रवेश करते हैं तो आपको समूचे शहर की फिजाओं में लोकसभा चुनावों का रंग घुला हुआ मिलता है। सारा माहौल गुलजार है। आमतौर पर इधर बातचीत का मुख्य बिन्दू यही है कि राज्य की 13 लोकसभा सीटों में किस दल के हक के कितनी सीटें जाएंगी। पर यह एक दुर्भाग्य ही है कि बसपा दूर-दूर तक कहीं चर्चा में नहीं है।

सभी को यह हैरान करता है। रोपड़ बसपा के संस्थापक कांशीराम का यह अपना शहर है। इधर ही उनका बचपन बीता, इधर के ही सरकारी कॉलेज से उन्होंने शिक्षा ग्रहण की। आप चाहें तो और हैरान हो सकते हैं कि उनके कॉलेज के आसपास भी बसपा का कोई झंडा तक दिखाई नहीं दिया। कुल मिलाकर यहां पर आकर चिराग तले अंधेरे वाली कहावत सच साबित होती दिखी।

आखिर पंजाब के चुनावी समर में भी बसपा या कांशीराम की कोई भारी-भरकम उपस्थिति रोपड़ या पंजाब में क्यों नजर नहीं आ रही? पंजाब के कुछेक समाज शास्त्रियों से बातचीत के बाद हमें अपने सवाल का जवाब मिला। इन सभी की राय थी कि चूंकि पंजाब में सिख धर्म और आर्य समाज के प्रभाव के चलते दलितों को उस तरह से सामाजिक स्तर पर प्रताड़ित नहीं होना पड़ा, जैसे अन्य राज्यों में उन्हें झेलना पड़ा। इन दोनों मजबूत धार्मिक संस्थाओं ने जाति के कोढ़ पर हल्ला बोला। नतीजा यह हुआ कि पंजाब के समाज में दलितों का उत्पीड़न कम हुआ। इस पृष्ठभूमि की रोशनी में ही पंजाब का दलित अपने को बसपा से जोड़कर नहीं देखता। आपको पंजाब में जगह-जगह दलितों के गुरुद्वारे तो देखने को मिल जाएंगे। उनके बाहर गुरुमुखी और कइयों के बाहर हिन्दी में भी लिखा रहता 'मजहबी', 'रामगढ़िया' या 'संत रविदास' गुरुद्वारा। और तो और, चंडीगढ़ में भी आपको इस तरह के गुरुद्वारे मिल जाएंगे। यह अन्य गुरुद्वारे से भव्यता के स्तर पर कतई उन्नीस नहीं हैं। ये कहीं न कहीं उनकी आर्थिक सेहत को भी रेखांकित करते हैं।

यानी पंजाब का दलित उस तरह से पिछड़ा, दबा-कुचला नहीं है, जिस तरह से वो देश के बाकी भागों में या कम से कम उत्तर भारत के अन्य सूबों में हैं। जाहिर है, इसी वजह से चुनावों में पंजाब में दलित बहुजन समाज पार्टी के पक्ष में खड़े नजर नहीं आते। संभवत- इसलिए बहुजन समाज पार्टी के संस्थापक कांशीराम पंजाब से संबंध रखने के बाद भी बसपा को अपने ही गृह प्रदेश में मजबूत आधार देने में कामयाब नहीं हुए। पंजाब में कुल 30 फीसदी मतदाता दलित हैं, यानी उत्तर प्रदेश से भी ज़्यादा! देश के किसी भी अन्य सूबे में इतने अधिक दलित वोटर कहीं नहीं हैं। देश से बाहर बड़ी संख्या में जाने के फलस्वरूप पंजाब के दलितों के हालात सुधर गए। जो बाहर गए, वे भारत में अपने परिवारों को अच्छी-खासी रकम भेजते रहे। पंजाब से बाहर रोटी-रोजी कमाने के लिए जाने वालों में दलित सिख सर्वाधिक रहे हैं। आपको अफ्रीका में भी दलितों के गुरुद्वारे मिल जाएंगे।

एक दौर में पंजाब में कांग्रेस के पास ज्ञानी जैल सिंह और बूटा सिंह के रूप में दंबग दलित नेता थे, पर साल 1984 में पहले स्वर्ण मंदिर में सैन्य कार्रवाई और इंदिरा गांधी की हत्या के बाद सिखों के कत्लेआम के बाद पंजाब में पार्टी कमजोर हुई। उसे उपर्युक्त दोनों दिग्गज दलित नेताओं के केन्द्र की राजनीति करने के कारण रिक्त हुए स्थान को भरने के लिए भी कोई नया नेता सामने नहीं आया। जैल सिंह तो देश के राष्ट्रपति ही बन गए। बहरहाल, बसपा की तरफ से लोकसभा चुनाव के लिए काफी संख्या में उम्मीदवार खड़े हुए हैं। कुछ समय पहले तक अरविंद केजरीवाल की कैबिनेट में मंत्री रहे राजकुमार आनंद भी नॉर्थ-वेस्ट दिल्ली से बसपा के उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ रहे हैं। हालांकि लगता नहीं कि बसपा कहीं भी अपना असर छोड़ेगी। इसकी बड़ी वजह मायावती का कमजोर नेतृत्व और उनके ऊपर लगे तमाम आरोप ही हैं।

भोजन से पहले और बाद में चाय-कॉफी पीने वाले संभल जाएं

भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद ने हाल ही में भारतीयों के लिए 17 आहार (डाइट) संबंधी दिशानिर्देशों का एक सेट जारी किया है। इसमें स्वस्थ जीवन के साथ संतुलित और विविध प्रकार के आहार पर जोर दिया गया है। इसके अलावा, चाय और कॉफी को लेकर बड़ी बात कही गई है। ICMR ने भारतीय संस्कृति में गहराई से रचे-बसे दो प्रिय पेय पदार्थों चाय और कॉफी के सेवन में संयम बरतने की सलाह दी है। दरअसल ICMR ने हाल ही में राष्ट्रीय पोषण संस्थान (एनआईएन) के साथ साझेदारी में 17 नए आहार दिशानिर्देश पेश किए हैं। इनका लक्ष्य पूरे भारत में स्वस्थ खाने की आदतों को प्रोत्साहित करना है। चिकित्सा विशेषज्ञों ने संभावित स्वास्थ्य चिंताओं के कारण चाय और कॉफी के अत्यधिक सेवन के खिलाफ चेतावनी दी है। उन्होंने कहा है कि खाना खाने से पहले और तुरंत बाद में चाय और कॉफी नहीं पीनी चाहिए।

आईसीएमआर शोधकर्ताओं ने बताया, चाय और कॉफी में कैफीन होता है, जो सेंट्रल नर्वस सिस्टम

(केंद्रीय तंत्रिका तंत्र) को उत्तेजित करता है और शरीर में हलचल पैदा कर देता है। हालांकि उन्होंने लोगों को चाय या कॉफी से पूरी तरह परहेज करने के लिए नहीं कहा, लेकिन उन्होंने इन पेय पदार्थों में कैफीन की मात्रा से सावधान रहने के लिए आगाह किया है। एक कप (150 मिलीलीटर) ब्रूड कॉफी में 80-120 मिलीग्राम कैफीन होता है। वहीं इतनी ही मात्रा की इंस्टेंट कॉफी में 50-65 मिलीग्राम और चाय में 30-65 मिलीग्राम कैफीन होता है।

आईसीएमआर प्रतिदिन केवल 300 मिलीग्राम कैफीन का सेवन करने की सलाह देता है। वैज्ञानिकों ने बताया, चाय और कॉफी के सेवन में संयम बरतने की सलाह दी जाती है ताकि कैफीन का सेवन सहनीय सीमा (300 मिलीग्राम/दिन) से अधिक न हो। उन्होंने लोगों से भोजन से कम से कम एक घंटा पहले और एक घंटे बाद में कॉफी और चाय पीने से बचने को कहा है। ऐसा इसलिए है क्योंकि इन पेय पदार्थों में टैनिन नामक कंपाउंड होता है। जब इसका सेवन किया जाता है, तो टैनिन शरीर में आयरन के अवशोषण में बाधा उत्पन्न कर सकता है। इसका मतलब यह है कि टैनिन आपके शरीर द्वारा भोजन से प्राप्त आयरन की मात्रा को कम कर सकता है। इसके अलावा, आपके द्वारा खाए जाने वाले भोजन से आपके रक्तप्रवाह में प्रवेश करने वाले आयरन की मात्रा कम हो जाती है। इससे आपके शरीर में आयरन की उपलब्धता कम हो जाती है।

ॐ यह परमात्म शक्ति द्वारा स्वयंभू प्रगट प्रणव ''अक्षर'' है

ॐ यह परमात्म शक्ति द्वारा स्वयंभू प्रगट प्रणव ''अक्षर'' है। प्रणव अर्थात जिसमे प्राण हो, ''अक्षर आत्मा'' के प्रकाश से ही इस विश्व की प्रत्येक जीव सृष्टि में (उद्भिज से लेकर जरायुज तक) स्वयं स्फूरण रूप प्राणों का संचार होता है इसीलिए इसे ''प्रणव अक्षर ''कहा जाता है।

निजानन्द अस्तित्व में
स्फूरण रूप जो भाव।
पराशक्ति ''अक्षर'' यही, माया
वस्तु स्वभाव।
''ॐ इति बृम्ह,
ॐ इति सर्वम्।''
अर्थात
ॐ ही बृम्ह है,
ॐ ही सम्पूर्ण जगत है।
''तस्यवाचकः प्रणवः''
पातांजली के इस सूत्रानुसार

ईश्वर वाचक ॐ ये प्रणव अक्षर है जिसमं सभी नामं और गुणों का समावेश होता है। ॐ कार यह उस ईश्वर का ही बोधक है इसलिए ''तज्जपःतदर्थ भावनम्''

अर्थात ॐ अक्षर का सदैव जाप करते हुए उसके अर्थ का सदैव अनुसंधान रखना यही ईश्वर प्राप्ति का साधन है।

व्यष्टि शरीर में इसका प्रागट्य मनुष्य के ''मणिपुरचक्र (नाभि) पर अनहद नाद से होता है।

इस विश्व की सम्पूर्ण शरीरधारी जीवसृष्टि का माता के गर्भ में आने के पश्चात नाभि द्वारा ही पोषण होकर निर्धारित समय मर्यादा में अव्यक्त से व्यक्त होते समय ॐ का ही स्वरूप रहता है।

''ॐ यानि यथा पिण्डे तथा बृम्हाण्डे''

अर्थात जैसे हमारा यह शरीर है वैसे ही विश्व की संरचना है। शिवसंहिता के दूसरे पटल में भगवान शिव इस सत्य का रहस्योद्घाटन करते हुए कहते है कि ''मानव आकृति ये विश्व बृम्हाण्ड की ही प्रतिकृति है। जो शक्तियाँ इस विश्व का संचालन करती है।

वही मनुष्य के शरीर में भी है। इसीलिए पूर्वयुग में सर्ववांऽगमय रूप प्रणव संज्ञक एक ही वेद था ''ॐ''

एक एव पुरा वेदःप्रणवः
सर्ववांऽगमय।
(भा,पुराणः 48, 11,11)

इसी से चारों वेदों का जन्म हुआ है। ''वेद'' (जानना) स्वयंभू है। वेद ज्ञान विज्ञानयुक्त अपरोक्ष ज्ञान है। जब परमात्म स्वरूप को नारायण ने निजरूप जाना ओर उस अवस्था मे जो शब्द उनके मुख से निकले उनका नाम ''वेद'' एवं स्वयंभू निश्चित प्रगट होना है। (इसीलिए वेदों को अपौरुषेय कहा है)

(बुद्ध सूक्त खंड 3 सूत्र 712)

(वेदों को जानने की कुंजी कलियुग मे नवमबुद्ध अवतार भगवान श्री मायानंद चैतन्य रचित ''सर्वांगयोग'' है अर्थात ''सर्ववांऽगमय योग''।

बीज ॐ मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम् (गीताजी अ 7-10)।

भगवान के इस कथन अनुसार विश्व के कण कण मे परमात्म वस्तु एक ही है परन्तु वह दस प्रकार से भासती है।

पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन और धी।

अहंकार यही मेरे पृकृति के अष्टांग है।

अपरा ये; परा मेरी जो सो प्रकृति अन्य है।

जीवभूता महाबाहू धारे है सब विश्व वो।
(श्रीमद्गीता अ,7-4-5)

अर्थात-पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये पंचतत्व और सत्व, रज, तम ये तीन गुण तथा इन सबकी साम्यावस्था ''क्षर पृकृति'' (अपराशक्ति)ओर इन सब का साक्षी ''अक्षर'' (पराशक्ति) इन्ही में अनन्त तक सब आ चुका।

वेदो मे जो दशांगुलम कहा हे उन्हें उंगलियों से गिनकर देखना इन्ही दशांगुलम मे परमात्मा स्थित है।

परमात्म सृष्टि में चार खानियों की चार अवस्थाए है (1) उद्भिज (2) स्वेदज (3) अण्डज (4) जरायुज (पिणडज) ये चारों अवस्थाए जीव के स्वभाव की है इन सबमे जीव एक है। जीव बृम्ह से पृथक होकर सर्वप्रथम पृकृति के गर्भ से उद्भव होता है तब ये उद्भिज योनी में जाता है। सभी प्रकार के उद्भिजों का अंकुरित स्वरूप उद्भव होते समय प्राकृतिक रहता है जो अधःमूलं उर्ध्वम् शाखा के रूप मे रहता है परन्तु उसे बायी ओर घुमाकर देखा जाए तो ॐ प्राकृतिक स्वरूप मे दिखता है इसमें पोषण नीचे से ऊपर की ओर जाता है, सभी प्रकार के उद्भिजों का बीज (मूल स्वरूप) पृथ्वी तत्व ओर उसके चार सहयोगी तत्व (जल,अग्नि, वायु और आकाश है) ओर तमोगुण प्रधान तीन गुण कर्ता है।

उसी प्रकार स्वेदजों का बीज (मूल) जल तत्व ओर अन्य चार सहयोगी तत्व है (प्रथ्वी, अग्नि, वायु और आकाश) इस योनी में समानांतर रूप से पोषण जाता है।

तीसरी खानि अण्डज है जिसका बीज ''अग्नि'' ओर चार अन्य सहयोगी तत्व (पृथ्वी, जल, वायु और आकाश है)। इस योनी में भोजन कुछ ऊपर से नीचे की ओर पोषण हेतु जाता है।

इसके बाद चौथी खानी पिंडज है इसमे सर्वश्रेष्ठ योनी मनुष्य है। जिसका बीज वायु प्रधान है, इस तत्त्व से बनी ज्ञान इन्द्रिय त्वचा है जिससे पिंडज को आकार प्राप्त होता है और अन्य चार तत्वों से (पृथ्वी तत्व से नासिका, जल तत्व से जिव्हा, अग्नि तत्व से नैत्र तथा आकाश तत्व से श्रवणइन्द्रिय कान) ज्ञानेन्द्रियों का निर्माण होता है।

इसमे पूरा एक परिभ्रमण चक्र हो जाने से ''उर्ध्व मूलं अधः शाखा का स्वरूप प्राकृतिक रूप से स्पष्ट हो जाता है अर्थात पोषण ऊपर से नीचे की ओर आता है।

इस तरह इस पूरे परिभ्रमण चक्र में चारों खानियों की चराचर सृष्टि में जीव घूमने पर भी ''ॐ'' का ही स्वरूप अव्यक्त से व्यक्त होते समय रहता है। ओर इन सभी योनियों में तमोगुण प्रधान तीन गुण ही कर्ता है। और इन चारो अवस्थाओं का मूल अवकाश (आकाश) है। अवकाश के अभाव मे उत्क्रान्ति की कल्पना ही नहीं हो सकती।

इस प्रकार ''विश्व ॐ विष्णु'' स्वयं ही अपने ''क्षर विराट'' (अपरा प्रकृति) के रूप में अखंड मंडलाकार गति से भ्रमण करते हुए विविध स्वरूपो में ''अक्षरआत्मा'' का प्रकाश बनकर (हिरण्यगर्भ रूप से परा पृकृति बनकर) अस्ति, भांति, प्रिय रूप से अपने ही दृश्य स्वरूप व गुणसाम्या मे अपनी ही निजलीला का आनंद ले रहे है। इसीलिए वेदो मे बृम्ह को ''सत् चित् आनंद'' स्वरूप कहा है।

भगवान श्री मायानंद चैतन्य जी ने अपने बृम्ह स्वरूप ''एकोऽहं बहुस्याम'' का यथार्थ अनुभव इस प्रकार दिया है-

''बृम्ह स्वरूप पुरूषोत्तम पद'' मे जब बहुश्याम का संकल्प उदित हुआ तब उसने संपूर्ण विश्व को निज स्वरूप मे देखा। उस समय सब प्रकार के जीवों मे निजवस्तु का बोध सर्वप्रथम जल तत्व स्थित (रस) अनुभव मे शयन करने वाले विभूतिरूप नारायण ने पाया पश्चात वही बीज परंपरा चल निकली (नर नारायण उत्तर क्रमांक 702)।

''विचिन्तयेत ॐ कार मात्र सचराचरम जगत''

इस तरह बृम्हाण्ड मे जो ''ॐ'' का स्वरूप है वही अंश-अंशी भाव से अखंड, अचल स्वयं सिद्ध अपना ही स्वरूप है।

''प्र''=प्रज्ञा (ज्ञान)
''णव''= नाव (नौका)

प्रज्ञारूपी ज्ञानचक्षु (दिव्य दृष्टि) की नौका द्वारा भवसागर को पार करने का (मोक्ष प्राप्ति का) ऊज्जवल मार्ग ही ''ॐ कार'' है । ''ॐकार'' यानि बृम्ह स्वरूप प्रत्यक्ष अनुभव ज्ञान।

ॐ शान्ति ॐ शान्ति ॐ शान्ति।

लेखक-कुसुम नरेन्द्र त्रिवेदी
33,Narnarayan सोसायटी।
दक्षिणी सो. के पास
गणपति गली, मणिनगर
अहमदाबाद गुजरात 8

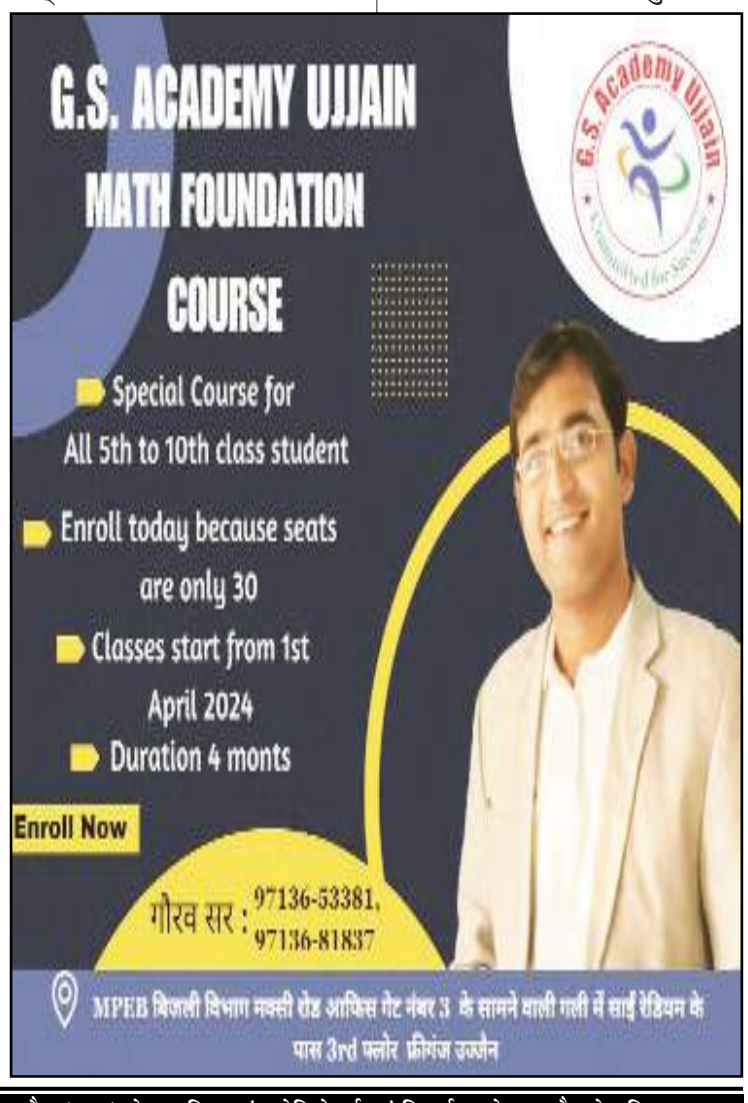

स्वताधिकारी/प्रकाशक मनमोहन शर्मा के लिये साप्ताहिक उज्जैन टाइम्स 110, तिरुपति एवेन्यू, होटल नत्रक्ष के पीछे, पंचक्रोशी मार्ग, उज्जैन (म.प्र.) से प्रकाशित एवं ज्योति ट्रेडर्स एवं प्रिन्टर्स न्यू रोड़, उज्जैन से मुद्रित।
● प्रधान सम्पादक : मनमोहन शर्मा मोबा. 9827233734 manmohan680@gmail.com (सभी वाद-विवादों का न्याय क्षेत्र उज्जैन रहेगा)। (म.प्र. शासन से 01-04-1997 से समाचार पत्र विज्ञापनों हेतु अनुमोदित)